## About the Book

यह गाइडबुक आपकी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता पाने का सबसे अच्छा साधन है। यह पुस्तक परीक्षा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को कवर करती है और सभी NCERT पाठ्यपुस्तकों के महत्वपूर्ण बिंदुओं को भी शामिल करती है। पिछले वर्षों के प्रश्न पत्रों के महत्वपूर्ण बिंदुओं का भी इस गाइडबुक में समावेश है, जिससे आपकी तैयारी सबसे अच्छी हो सके। हर अध्याय के अंत में, आपको पिछले प्रश्न पत्रों और अन्य विश्वसनीय स्रोतों से चुने गए अभ्यास प्रश्न मिलेंगे।

यह गाइडबुक स्व-अध्ययन के लिए बनाई गई है, जो सभी टॉपिक्स को सरल और आसान भाषा में समझाती है। अगर आप इस गाइडबुक को गंभीरता से पढ़ते हैं और पूरी करते हैं, तो आप आसानी से परीक्षा के 80% सवाल हल कर पाएंगे। हमने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत मेहनत की है कि यह गाइडबुक आपकी पूरी तैयारी के लिए पर्याप्त है। तो आज ही इस गाइडबुक का गहन अध्ययन करना शुरू करें और अपने सपने को हकीकत में पूरा करने की ओर एक बड़ा कदम उठाएं!

### अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB2025

CTET PAPER-1 (कक्षा 1 से 5)
स्टडी बुक (गणित | पर्यावरणीय अध्ययन)
ISBN - 978-93-6890-542-4
₹ 699

CTET PAPER-1 (कक्षा 1 से 5) स्टडी बुक (गणित | पर्यावरणीय अध्ययन)

CB2025

AGRAWAL EXAMCART

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

# CTET

## केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

### PAPER-1 (कक्षा 1 से 5)

## सम्पूर्ण स्टडी बुक

गणित | पर्यावरणीय अध्ययन |
बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र |
English | हिंदी

यह स्टडी बुक तभी पढ़ना, जब चाहते हो CTET की CUT-OFF को सरलता से CRACK करना!

### मुख्य विशेषताएँ

1. **संपूर्ण थ्योरी** — NCERT की पाठ्यपुस्तकों और CTET के पाठ्यक्रमानुसार हर विषय की संपूर्ण थ्योरी
2. **संपूर्ण शिक्षाशास्त्र** — हर विषय के शिक्षाशास्त्र को सरल भाषा में पाठ्यक्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है
3. **2000+ अभ्यास प्रश्न** — विगत पेपर्स से चयनित महत्वपूर्ण प्रश्नों का अध्यायवार समावेश

| Code | Price | Pages | ISBN |
|---|---|---|---|
| CB2025 | ₹ 699 | 710 | 978-93-6890-542-4 |

# विषय सूची


➔ **परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना (Important Information)** ix
(CTET परीक्षा की सम्पूर्ण जानकारी एवं पुस्तक या किसी भी समस्या के लिए हमारा Helpline No.)

➔ **पाठ्यक्रम एवं परीक्षा पैटर्न** x


## बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र


| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | अभ्यास प्रश्न | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| **1.** | शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology) | **22** | **1-9** |
| **2.** | विकास की अवधारणा एवं सीखने के साथ इसका सम्बन्ध (Concept of Development and its Relationship with Learning) | **20** | **10-14** |
| **3.** | बाल विकास के सिद्धान्त (Principles of Child Development) | **20** | **15-22** |
| **4.** | पर्यावरण और आनुवंशिकता का प्रभाव एवं समाजीकरण (Influence of Environment and Heredity & Socialization) | **22** | **23-30** |
| **5.** | पियाजे, वायगोत्सकी एवं कोहलबर्ग के सिद्धान्त (Theories of Piaget, Vygotsky & Kohlberg) | **23** | **31-39** |
| **6.** | बाल केंद्रित शिक्षा एवं प्रगतिशील शिक्षा (Child Centered Education and Progressive Education) | **22** | **40-48** |
| **7.** | बुद्धि व बुद्धि परीक्षण (Intelligence and Intelligence Tests) | **25** | **49-57** |
| **8.** | भाषा और चिंतन (Language and Thinking) | **20** | **58-70** |
| **9.** | समाज निर्माण में जेंडर की भूमिका (Gender Role in Society Building) | **22** | **71-76** |
| **10.** | आकलन, मापन, मूल्यांकन एवं सतत् व व्यापक मूल्यांकन (Assessment, Measurement, Evaluation and Continuous and Comprehensive Evaluation) | **23** | **77-83** |
| **11.** | उपलब्धि मूल्यांकन, प्रश्न तैयार करना तथा आलोचनात्मक सोच (Achievement Evaluation, Framing of Questions and Critical Thinking) | **22** | **84-95** |
| **12.** | समावेशी शिक्षा की अवधारणा और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समझने तथा सीखने में कठिनाइयाँ (Concept of Inclusive Education, Understanding Diverse Learners and Learning Difficulties) | **25** | **96-107** |
| **13.** | शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, रणनीतियाँ और पद्धतियाँ (Teaching Learning Process, Strategies and Methods) | **24** | **108-123** |
| **14.** | संज्ञान एवं संवेग (Cognition and Emotion) | **23** | **124-134** |
| **15.** | अभिप्रेरणा (Motivation) | **22** | **135-142** |
| **16.** | एक समस्या–समाधानकर्ता और एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बच्चा (Child as a Problem Solver & as a Scientific Investigator) | **21** | **143-147** |
| **17.** | क्रियात्मक अनुसन्धान (Action Research) | **28** | **148-152** |
| **18.** | बाल केन्द्रित शिक्षा और सरकारी शिक्षा नीतियाँ (CCE and Government Education Policies) | **20** | **153-159** |
| | | **कुल प्रश्न संख्या : 404** | |

# हिंदी भाषा एवं शिक्षाशास्त्र


| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | अभ्यास प्रश्न | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| **हिंदी भाषा** | | | |
| 1. | अपठित गद्यांश | 73 | 1-5 |
| 2. | अपठित पद्यांश | 49 | 6-8 |
| 3. | व्याकरण | 154 | 9-38 |
| **शिक्षाशास्त्र** | | | |
| 1. | अधिगम एवं अर्जन | 15 | 39-43 |
| 2. | भाषा शिक्षण के सिद्धान्त | 13 | 44-50 |
| 3. | भाषा दक्षता का विकास | 15 | 51-56 |
| 4. | भाषा अधिगम में व्याकरण की भूमिका | 15 | 57-59 |
| 5. | भाषाई कौशलों का विकास | 15 | 60-67 |
| 6. | शिक्षण सहायक-सामग्री | 17 | 68-73 |
| 7. | भाषा शिक्षण में मूल्यांकन | 16 | 74-81 |
| 8. | बच्चों में पढ़ने-लिखने सम्बन्धी विकार | 15 | 82-87 |
| 9. | उपचारात्मक शिक्षण | 15 | 88-91 |
| 10. | भाषा शिक्षण में बहुभाषिकता | 15 | 92-101 |
| 11. | काव्य शिक्षण | 8 | 102-104 |
| | | कुल प्रश्न संख्या : 435 | |


# English Language and Pedagogy


| S.N. | Chapter's Name (Complete Theory) | Practice Questions | Page No. |
|---|---|---|---|
| **English Language** | | | |
| 1. | Reading Comprehension | 68 | 1-5 |
| 2. | Grammar | 160 | 6-35 |
| 3. | Vocabulary | 137 | 36-47 |
| 4. | Simple, Compound & Complex Sentences | 12 | 48-51 |
| 5. | Figures of Speech | 11 | 52-54 |
| **Pedagogy** | | | |
| 1. | Learning And Acquisition (अधिगम एवं अर्जन) | 10 | 55-63 |
| 2. | Principle, Methods And Approaches of Teaching English (अंग्रेजी शिक्षण के सिद्धांत, विधियाँ और दृष्टिकोण) | 15 | 64-75 |

| S.N. | Chapter's Name (Complete Theory) | Practice Questions | Page No. |
|---|---|---|---|
| 3. | Role of Listening and Speaking; functions of Language (सुनने और बोलने की भूमिका : भाषा के कार्य) | 12 | 76-82 |
| 4. | Role of Grammar in Learning a Language (किसी भाषा को सीखने में व्याकरण की भूमिका) | 15 | 83-84 |
| 5. | Challenges of Teaching Language in a Diverse Classroom (विविध कक्षा में भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ) | 16 | 85-90 |
| 6. | Language Skills (भाषा कौशल) | 15 | 91-96 |
| 7. | Evaluating Language Comprehension and Proficiency (भाषा की समझ और दक्षता का मूल्यांकन) | 19 | 97-103 |
| 8. | Teaching Learning Material (शिक्षण अधिगम सामग्री) | 15 | 104-109 |
| 9. | Remedial Teaching (उपचारात्मक शिक्षण) | 15 | 110-112 |
| 10. | Teaching English in Bilingual/Multilingual (द्विभाषी/बहुभाषी संदर्भों में अंग्रेजी शिक्षण) | 15 | 113-120 |
| | | Total Questions : 535 | |


## गणित एवं शिक्षाशास्त्र


| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | अभ्यास प्रश्न | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| **गणित** | | | |
| 1. | संख्या पद्धति (Number System) | 22 | 1-6 |
| 2. | गणितीय मूल संक्रियाएँ (Mathematical Operations) | 15 | 7-10 |
| 3. | लघुत्तम समापवर्त्य और महत्तम समापवर्तक (L.C.M. and H.C.F.) | 19 | 11-14 |
| 4. | भिन्न एवं दशमलव संख्याएँ (Fractions and Decimal Numbers) | 19 | 15-19 |
| 5. | वर्ग-वर्गमूल एवं घन-घनमूल (Square-Square Root and Cube-Cube Root) | 18 | 20-24 |
| 6. | औसत (Average) | 13 | 25-27 |
| 7. | समय और दूरी (Time and Distance) | 14 | 28-30 |
| 8. | ज्यामिति (Geometry) | 20 | 31-42 |
| 9. | क्षेत्रमिति (Mensuration) | 19 | 43-48 |
| 10. | राशियाँ एवं मापन (Units and Measurement) | 17 | 49-51 |
| 11. | मुद्रा (Money) | 15 | 52-54 |
| 12. | कैलेण्डर (Calendar) | 9 | 55-56 |
| 13. | घड़ी और समय सारणी (Clock and Time Table) | 14 | 57-59 |

| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | अभ्यास प्रश्न | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 14. | पैटर्न (Pattern) | 14 | 60-61 |
| 15. | सांख्यिकी और आँकड़ा प्रबन्धन (Statistics & Data Handling) | 19 | 62-70 |
| **शिक्षाशास्त्र** | | | |
| 1. | गणित की प्रकृति/तार्किक सोच (Nature of Mathematics/Logical Thinking ) | 14 | 71-77 |
| 2. | पाठ्यक्रम में गणित का स्थान (Place of Mathematics Curriculum) | 12 | 78-86 |
| 3. | गणित की भाषा (Language of Mathematics) | 10 | 87-88 |
| 4. | सामुदायिक गणित (Community Mathematics) | 10 | 89 |
| 5. | मूल्यांकन (Evaluation) | 12 | 90-96 |
| 6. | निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण (Diagnostic and Remedial Teaching) | 12 | 97-103 |
| 7. | शिक्षण में समस्याएँ (Problems of Teaching) | 15 | 104-119 |
| 8. | त्रुटि विश्लेषण और सीखने और सिखाने के सम्बन्धित पहलू (Error Analysis and Related Aspects of Learning and Teaching) | 17 | 120-123 |
| | | कुल प्रश्न संख्या : 349 | |


## पर्यावरणीय अध्ययन एवं शिक्षाशास्त्र


| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | अभ्यास प्रश्न | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| **पर्यावरणीय अध्ययन** | | | |
| 1. | परिवार, सम्बन्ध एवं पर्यावरण (Family, Relations and Environment) | 15 | 1-12 |
| 2. | पादप एवं जंतु जगत (Plant and Animal Kingdom) | 15 | 13-19 |
| 3. | मानव शरीर एवं रोग (Human Body and Diseases) | 20 | 20-24 |
| 4. | हमारी मूल आवश्यकताएँ (Our Basic Needs) | 15 | 25-31 |
| 5. | आश्रय (Shelter) | 15 | 32-35 |
| 6. | परिवहन तथा संचार (Transportation and Communication) | 10 | 36-41 |
| 7. | भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विविधता और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन (Cultural and Natural Diversity of India and Indian Freedom Movement) | 15 | 42-49 |
| 8. | ब्रह्मांड तथा सौर मंडल (Universe and Solar System) | 10 | 50-58 |
| 9. | पृथ्वी (पृथ्वी की आंतरिक संरचना, ऋतुएँ, अक्षांश, देशांतर तथा चट्टानें) [Earth (Interior of Earth, Seasons, Longitudes, Latitudes and Rocks)] | 10 | 59-65 |
| 10. | जल तथा वायु (Water and Air) | 15 | 66-71 |
| 11. | मृदा तथा फसलें (Soil and Crops) | 10 | 72-77 |
| 12. | ऊर्जा (Energy) | 8 | 78-80 |
| 13. | भारत की भौतिक विशेषताएँ (Physical Features of India) | 15 | 81-90 |
| 14. | कचरा तथा अपशिष्ट प्रबंधन (Garbage and Waste Management) | 9 | 91-92 |
| 15. | प्राकृतिक आपदा एवं इसका प्रबंधन (Natural Disaster and Its Management) | 13 | 93-96 |

| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | अभ्यास प्रश्न | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| **शिक्षाशास्त्र** | | | |
| **1.** | पर्यावरण शिक्षा (ईवीएस) की अवधारणा और दायरा (Concept and Scope of EVS) | **15** | **97-101** |
| **2.** | पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य, अवधारणा और महत्व (Objectives, Concept and Significance of Environmental Education) | **15** | **102-115** |
| **3.** | पर्यावरण अध्ययन और पर्यावरण शिक्षा (Environment Studies and Environment Education) | **12** | **116-118** |
| **4.** | विज्ञान और समाज विज्ञान के लिए कार्यक्षेत्र ओर संबंध (Scope and Relation to Science and Social Science) | **15** | **119-121** |
| **5.** | प्रस्तुत अवधारणाओं के दृष्टिकोण (Approaches of Presenting Concepts) | **8** | **122-126** |
| **6.** | अधिगम के सिद्धान्त (Learning Principles) | **12** | **127-135** |
| **7.** | गतिविधियाँ (Activities) | **15** | **136-140** |
| **8.** | प्रयोग/परियोजना कार्य (Experimentation Project Work) | **15** | **141-144** |
| **9.** | चर्चा (Discussion) | **14** | **145-146** |
| **10.** | सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) (Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE)) | **15** | **147-154** |
| **11.** | शिक्षण सामग्री/संसाधन (Teaching Material/Aids) | **17** | **155-160** |
| **12.** | समस्या (Problems) | **15** | **161-165** |
| | | **कुल प्रश्न संख्या : 363** | |

# अतिरिक्त अध्ययन सामग्री ई-बुक
# (Extra Study Material E-Book)

**Extra Study Material ई-बुक का Content**

- नवीनतम 5 सॉल्व्ड पेपर्स की ई-बुक
- डिस्काउंट कूपन दिया गया है। उसका उपयोग करें और 'www.examcart.in' से हमारी किताबें सबसे अच्छे डिस्काउंट पर खरीदें।

**नोट** : **Link Expire** होने से पहले दिए गए **QR Code** को स्कैन करके आप यह **Extra Study Material E-Book** को **Download** कर लें।

## ऐसी पुस्तकें जो कोई आपको बताना नहीं चाहता!

इन अनोखी पुस्तकों ने कई छात्रों को उनके पहले प्रयास में ही परीक्षा पास करने में मदद की है और हम जो कहते हैं, उसे साबित भी करते हैं—इसीलिए हर पुस्तक के कुछ सैंपल चैप्टर दिए गए हैं। हम गारंटी देते हैं कि इन्हें पढ़ने के बाद आपको समझ आएगा कि ये पुस्तकें क्यों सबसे बेहतरीन हैं और क्यों इतने सारे छात्र इनसे सफल हुए हैं।

**नोट**

पढ़ने के लिए, किसी भी पुस्तक के पास दिए गए **QR Code** को स्कैन करें, उसके वेबसाइट पेज पर **"View PDF"** पर क्लिक करें। अगर पुस्तक पसंद आए, तो **Extra Study Material** ई-बुक में दिया गया डिस्काउंट कूपन इस्तेमाल करें और बेहतरीन डिस्काउंट भी पाएँ!

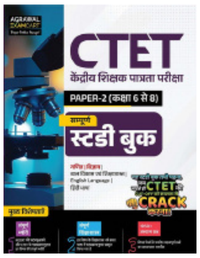


CTET
Class 6-8
गणित । विज्ञान
(Guide Book)

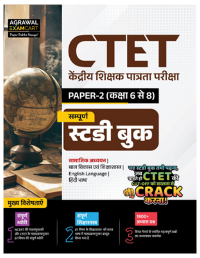


CTET
(Class 6-8)
सामाजिक अध्ययन
(Guide Book)

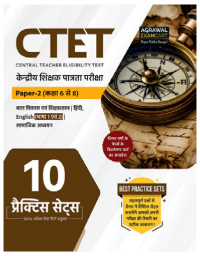


CTET
Class 6-8
सामाजिक अध्ययन
(Practice Sets)

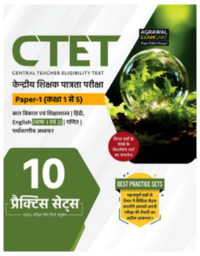


CTET
Class 1-5
गणित । पर्यावरणीय अध्ययन
(Practice Sets)

CTET
Class 6-8
गणित । विज्ञान
(Practice Sets)

CTET
Class 6-8
गणित । विज्ञान
(Solved Papers)

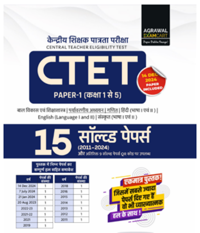


CTET
Class 1-5
(Solved Papers)

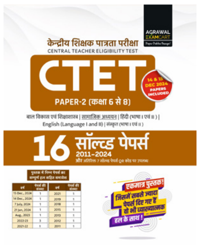


CTET
Class 6-8
सामाजिक अध्ययन
(Solved Papers)

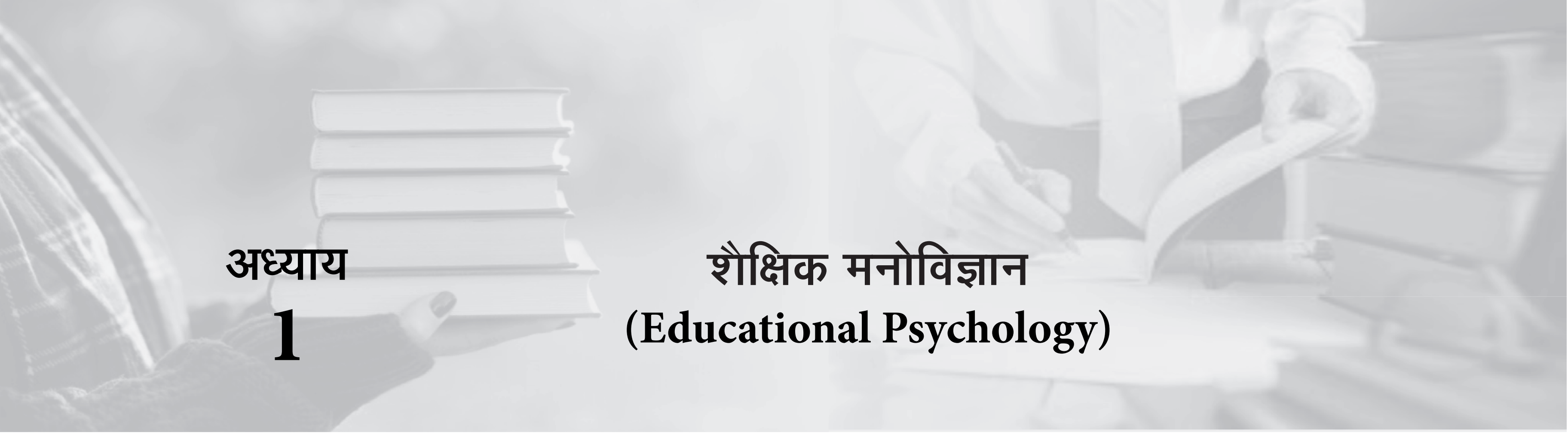

# अध्याय 1

# शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology)

## 1. परिचय (Introduction)

- अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के अनुसार मनोविज्ञान मन और व्यवहार का अध्ययन है।
- मनोविज्ञान के विभिन्न प्रकार हैं, जैसे संज्ञानात्मक, फोरेंसिक, सामाजिक और विकासात्मक मनोविज्ञान।
- एक ऐसी स्थिति वाला व्यक्ति जो मानसिक रूप से प्रभावित है, उसे मनोवैज्ञानिकों द्वारा मूल्यांकन व उपचार विधि द्वारा लाभान्वित किया जा सकता है।
- एक मनोवैज्ञानिक ऐसे उपचार की पेशकश कर सकता है जो व्यवहार अनुकूलन पर केंद्रित हो।
- साथ ही एक मनोचिकित्सक एक ऐसा चिकित्सक होता है, जो मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के चिकित्सा प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने की अधिक संभावना रखता है।

## 2. मनोविज्ञान क्या है ? (What is Psychology ?)

- मनोविज्ञान व्यवहार और मन, या मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन है। यह आंतरिक अनुभूति और भावनाओं के साथ–साथ बाहरी, दिखने योग्य व्यवहार दोनों की जाँच करता है।
- विल्हेम वुंड्ट ने 1879 में जर्मनी में पहली प्रयोगात्मक मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की, जिसने मनोविज्ञान को अपना वैज्ञानिक अनुशासन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान, अनुसंधान और प्रयोगात्मक परीक्षण पर निर्भर है; ताकि यह ज्ञात हो सके कि मनुष्य क्या कार्य करता है, क्या महसूस करता है; क्या सोचता है और क्या कहता है। साथ ही साथ मानव व्यवहार की भविष्यवाणी करने के कारणों को समझा जा सके।
- मनोविज्ञान के अध्ययन में व्यापक विषयों को शामिल किया गया है जिसमें व्यवहार की जैविक उत्पत्ति, न्यूरोट्रांसमीटर और मस्तिष्क, मानव विकास और विविधता, भावनाएँ, अनुभूति, बुद्धि, सीखने और व्यवहार के सिद्धांत और व्यक्तित्व आदि शामिल हैं।
- इसमें अनुसंधान विधियों और आँकड़ों और उनके साथ आने वाले नैतिक मानकों को भी शामिल किया गया है। अंत में ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक सोसायटी के द्वारा प्राप्त किये गये निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि, मनोविज्ञान मानसिक स्वास्थ्य विकारों के कारणों और निदान के साथ-साथ सबसे प्रभावी और साक्ष्य-आधारित उपचार विधियों से सम्बन्धित विषय है।
- अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संगठन के अनुसार मनोविज्ञान लोगों के मन और व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह एक फलता-फूलता अकादमिक अनुशासन और एक महत्वपूर्ण पेशेवर अभ्यास दोनों है।
- ❖ साथ ही मनोविज्ञान व्यक्तियों के व्यवहार और उनकी मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।

## 3. मनोविज्ञान की उत्पत्ति (The Origin of Psychology)

- शब्द "मनोविज्ञान" स्वयं ग्रीक शब्द ''मानस'' से प्राप्त हुआ है, जो श्वास, आत्मा, या मन का अनुवाद करता है। आज के समय में हम मनोविज्ञान को अध्ययन का एक अपेक्षाकृत नया क्षेत्र मानते हैं, लेकिन मनोविज्ञान की उत्पत्ति प्राचीन संस्कृतियों से हुई है और इसका संबंध दर्शन, चिकित्सा और जीव विज्ञान के क्षेत्रों से है।
- मनोविज्ञान को शताब्दियों पूर्व " दर्शन शास्त्र'' (Philosophy) की एक शाखा के रूप में जाना जाता था ।
- किन्तु मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र विषय बनाने के लिए इसे परिभाषित करना प्रारम्भ किया गया।
- PSYCHOLOGY शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के दो शब्दों PSYCHE + LOGOS से मिलकर हुई है। PSYCHE का अर्थ होता है "आत्मा का" तथा LOGOS का अर्थ होता है "अध्ययन करना " अर्थात् आत्मा का अध्ययन करना।
- इस शाब्दिक अर्थ के आधार पर सर्वप्रथम प्लेटो, अरस्तु और डेकार्ट के द्वारा मनोविज्ञान को "आत्मा का विज्ञान'' (Science of soul) माना गया ।
- किन्तु आत्मा शब्द की स्पष्ट व्याख्या नहीं होने के कारण 16वीं शताब्दी के अंत में यह परिभाषा अमान्य हो गई।
- पुनः 17वीं शताब्दी में इटली के मनोवैज्ञानिक पॉम्पोनोजी ने मनोविज्ञान को " मन या मस्तिष्क का विज्ञान " माना। बाद में यह परिभाषा भी अमान्य हो गई।
- इसके उपरान्त 19वीं शताब्दी में विलियम वुन्ट, विलियम जेम्स, वाइव्स और जेम्स सली आदि के द्वारा मनोविज्ञान को " चेतना का विज्ञान " माना गया था, किन्तु अपूर्ण अर्थ होने के कारण यह परिभाषा भी अमान्य हो गई।
- अन्त में 20वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को " व्यवहार का विज्ञान " माना गया, और आज तक यह परिभाषा प्रचलित है।
- व्यवहार का विज्ञान मानने वाले प्रमुख मनोवैज्ञानिक—वाटसन हैं। इसके अलावा वुडवर्थ , स्किनर , थॉर्नडॉइक और मैक्डुगल आदि मनोवैज्ञानिकों ने भी मनोविज्ञान को " व्यवहार का विज्ञान " माना है।
- विलियम वुन्ट ने जर्मनी के "लिपजिंग" नामक स्थान पर 1879 ई. में प्रथम "मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला" स्थापित की। इसलिए विलियम वुन्ट को " प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक" माना जाता है।
- विलियम मैक्डुगल ने अपनी पुस्तक" आउट लाइन साइकोलॉजी'' (Outline Psychology) में "चेतना शब्द" की भरसक निन्दा की है।

- **मनोविज्ञान की परिभाषा (Definition of Psychology)**
  - "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है।"– वाटसन ।
  - "तुम मुझे कोई भी बालक दे दो मैं उसे वैसा बनाऊँगा जैसा मैं उसे बनाना चाहता हूँ।"—वाटसन ।
  - " मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया, फिर मन का त्याग किया, फिर चेतना का त्याग किया और आज मनोविज्ञान व्यवहार की विधि के स्वरूप को स्वीकार करता है।'' —वुडवर्थ ।
- **मनोविज्ञान की प्राचीन जड़ें (Ancient Roots of Psychology)**
  - द एबर्स पेपिरस, 1550 ई.पू. का मिस्र का एक दस्तावेज, सबसे पुराना ज्ञात चिकित्सा पाठ है, और इसमें मनोवैज्ञानिक विकारों के बारे में जानकारी शामिल है।
  - प्राचीन यूनानी दार्शनिक सुकरात (469–399 ईसा पूर्व), प्लेटो (428–348 ईसा पूर्व), और अरस्तू (384–322 ईसा पूर्व) ने शरीर, मस्तिष्क और मानसिक प्रक्रियाओं और ज्ञान की उत्पत्ति के बीच संबंधों के बारे में महत्वपूर्ण विचारों पर चर्चा और बहस की।
  - हजारों साल पहले इन दार्शनिकों ने जिन बातों पर चर्चा की उनमें से अधिकांश आज भी मनोविज्ञान में बहस का हिस्सा हैं। यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स (460–375 ईसा पूर्व) ने भी स्वभाव की जैविक उत्पत्ति के बारे में अनुमान लगाया था।
- **आधुनिक मनोविज्ञान का जन्म (Birth of Modern Psychology)**
  - प्राचीन दार्शनिकों और चिकित्सकों के अलावा, कई प्रभावशाली व्यक्ति रहे हैं, जिन्होंने मनोविज्ञान के विकास और क्षेत्र से संबंधित विचारों को प्रस्तावित करने में योगदान दिया है।
  - इनमें से एक दार्शनिक और गणितज्ञ रेने डेसकार्टेस (1596–1650) थे जिन्होंने द्वैतवाद के विचार की इस अवधारणा को बढ़ावा दिया कि मन और शरीर अलग-अलग संस्थाएँ हैं। गौरतलब है कि उन्होंने सिद्धांत दिया कि मन और शरीर एक दूसरे के साथ संवाद करते हैं। जॉन लॉक (1632–1704) एक ब्रिटिश दार्शनिक थे जो द्वैतवाद के अपने विचार से असहमत थे। उन्होंने मानव समझ के संबंध में एक निबंध भी लिखा, जिसने जन्म के समय मन की उनकी प्रसिद्ध अवधारणा को तबुला रस (पूर्वकल्पित विचारों के उद्देश्य की अनुपस्थिति) या ''रिक्त स्लेट'' के रूप में प्रस्तुत किया।
  - जैसा कि हम जानते हैं, निम्नलिखित चार्ट मनोविज्ञान के विकास में कुछ सबसे महत्वपूर्ण क्षणों को सूचीबद्ध करता है।
  - 1879 में—जर्मनी के विल्हेम वुंड्ट ने मनोविज्ञान को अध्ययन के एक स्वतंत्र प्रयोगात्मक क्षेत्र के रूप में स्थापित किया। उन्होंने पहली प्रयोगशाला की स्थापना की जिसने विशेष रूप से लिपजिग विश्वविद्यालय में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान किया। वुन्ट को आज मनोविज्ञान के जनक के रूप में जाना जाता है।
  - 1890 में—एक अमेरिकी दार्शनिक, विलियम जेम्स ने 'मनोविज्ञान के सिद्धांत' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की। दुनिया भर के मनोवैज्ञानिकों द्वारा कई दशकों तक इस पर चर्चा की गई। उसी वर्ष, न्यूयॉर्क राज्य ने राज्य देखभाल अधिनियम पारित किया, जिसमें मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोगों को गरीब घरों को छोड़कर इलाज के लिए अस्पताल में प्रवेश करना सुनिश्चित किया गया।
  - 1890 में, जी. स्टेनली हॉल के नेतृत्व में अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (एपीए) की स्थापना की गई थी।
  - हरमन एबिंगॉस, (1850-1909) बर्लिन विश्वविद्यालय में काम करते थे। यह स्मृति का बड़े पैमाने पर अध्ययन करने वाले पहले मनोवैज्ञानिक थे।
  - इवान पॉवलोव, जो 1849 से 1936 तक जीवित रहे, उन्होंने एक प्रसिद्ध प्रयोग किया, जिसमें कंडीशनिंग की अवधारणा का परिचय देते हुए दिखाया गया था कि कुत्तों को भोजन की अपेक्षा होने पर उनकी लार टपकती है।
  - ऑस्ट्रियाई मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड, जो 1856 से 1939 तक जीवित रहे, उन्होंने एक प्रकार की मनोचिकित्सा समझ अर्थात् मनोविश्लेषण के क्षेत्र की शुरुआत की। उन्होंने मन की समझ हासिल करने के लिए व्याख्यात्मक तरीकों, आत्मनिरीक्षण और नैदानिक टिप्पणियों का इस्तेमाल किया।
  - उन्होंने अचेतन संघर्ष, मानसिक संकट और मनोविकृति को हल करने पर ध्यान केंद्रित किया। फ्रायड ने तर्क दिया कि अधिकांश लोगों के विचारों और व्यवहारों के लिए और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए अचेतन मन ही जिम्मेदार है।
  - ई.बी. टिचनर, एक अमेरिकी थे। वे संरचनावाद में दृढ़ता से विश्वास करते थे, जो इस प्रश्न पर केंद्रित है कि ''चेतना क्या है?''
  - विलियम जेम्स और जॉन डीवी कार्यात्मकता में दृढ़ विश्वास रखते थे, जिसने ''चेतना क्या है?'', इसको संबोधित किया था।
  - प्रकार्यवादियों और संरचनावादियों के बीच बहस ने संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य जगहों में मनोविज्ञान में रुचि में तेजी से वृद्धि की, और जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय (यू.एस.) में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना की।

    जैसाकि जानते हैं, निम्नलिखित चार्ट मनोविज्ञान के विकास में कुछ सबसे महत्वपूर्ण क्षणों को सूची बद्ध करता है—
- (1848) फिनीस गेज, घायल हो गया था, जब एक स्टील का खंभा उसकी आँख के नजदीक से होकर उसके मस्तिष्क के ललाट लोब के माध्यम से ऊपर चला गया था। यद्यपि वह इस घटना से बच गया, किन्तु उसका व्यक्तित्व काफी बदल गया। यह एक ऐसा तथ्य है जिसने मस्तिष्क और व्यक्तित्व के बीच संबंधों में अंतर्दृष्टि प्रदान की है।
- (1879) विल्हेम वुन्ट ने जर्मनी के लीपजिग में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना की। यह दुनिया भर से मनोविज्ञान के छात्रों के आने और सीखने का स्थान बन गया। वुन्ट खुद को मनोवैज्ञानिक के रूप में संदर्भित करने वाले पहले व्यक्ति भी थे और उन्हें मनोविज्ञान के पिता के रूप में जाना जाता है।
- (1883) वुन्ट के छात्र जी. स्टेनली हॉल ने जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना की। यह संयुक्त राज्य अमेरिका में इस तरह की पहली प्रयोगशाला थी तथा हॉल मनोविज्ञान में पी.एच.डी. प्राप्त करने वाले पहले अमेरिकी भी थे।
- 1890) विलियम जेम्स ने मनोविज्ञान की पहली पाठ्यपुस्तक, 'द प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी' प्रकाशित की।

- (1890) इवान पावलोव ने कुत्तों के साथ प्रयोग किए और शास्त्रीय कंडीशनिंग की खोज की।
- (1892) अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (एपीए) की स्थापना जी.स्टेनली हॉल ने की थी।
- (1894) मार्गरेट फ्लो वाशबर्न मनोविज्ञान में पी.एच.डी. प्राप्त करने वाली पहली महिला थीं।
- (1899) मनोविश्लेषण के संस्थापक सिगमंड फ्रायड ने अपनी पुस्तक 'द इंटरप्रिटेशन ऑफ ड्रीम्स, प्रकाशित की।
- (1903) मैरी व्हिटन काल्किन्स अमेरिकन 'साइकोलॉजिकल एसोसिएशन' (एपीए) की अध्यक्ष बनने वाली पहली महिला बनीं।

## 4. मनोविज्ञान में चिन्तन के प्रमुख स्कूल (Major Schools of Thinking in Psychology)

- मनोविज्ञान में चिन्तन के कुछ प्रमुख स्कूल निम्नलिखित हैं–
  - **संरचनावाद (Structuralism)**—वुन्ट और टिचनर की संरचनावाद सबसे प्रारंभिक विचारधारा थी, लेकिन अन्य वाद भी जल्द ही उभरने लगे।
  - **प्रकार्यवाद (Functionalism)**—प्रारंभिक मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विलियम जेम्स एक विचारधारा के साथ जुड़े, जिसे कार्यात्मकता के रूप में जाना जाता है, जिसने अपना ध्यान मानव चेतना और व्यवहार के उद्देश्य पर केंद्रित किया।
  - **मनोविश्लेषण (Psychoanalysis)**—जल्द ही, इन प्रारंभिक विचारधाराओं ने मनोविज्ञान के कई प्रभावशाली दृष्टिकोणों का मार्ग प्रशस्त किया। सिगमंड फ्रायड का मनोविश्लेषण इस बात पर केंद्रित था कि अचेतन मन ने मानव व्यवहार को कैसे प्रभावित किया है।
  - **व्यवहारवाद (Behaviourism)**—1913 में एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक जॉन बी वाटसन ने एक नए आंदोलन की स्थापना की जिसने मनोविज्ञान के केन्द्र को बदल दिया। उन्होंने तर्क दिया कि व्यवहार आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि इसका परिणाम है कि हम पर्यावरण के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। व्यवहारवाद इस बात पर केंद्रित है कि लोग पर्यावरण से नया व्यवहार कैसे सीखते हैं।
  - **मानवतावाद (Humanism)**—मानवतावादियों ने व्यवहारवाद और मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत को बहुत अमानवीय माना। पर्यावरण या अचेतनावस्था के शिकार होने के बजाय, उन्होंने प्रस्तावित किया कि मनुष्य सहज रूप से अच्छे हैं और हमारी अपनी मानसिक प्रक्रियाओं ने हमारे व्यवहार में सक्रिय भूमिका निभाई है। मानवतावादी आंदोलन भावनाओं, स्वतंत्र इच्छा और अनुभव के व्यक्तिपरक दृष्टिकोण पर उच्च मायने रखता है।
  - **संज्ञानात्मक सिद्धांत (Cognitive Theory)**—इसे 1970 के दशक में पेश किया गया। इसे मनोविज्ञान में सबसे हालिया विचारधारा के रूप में देखा जाता है। संज्ञानात्मक सिद्धांतकारों का मानना है कि हम अपने पर्यावरण से अपनी इंद्रियों के माध्यम से जानकारी लेते हैं और फिर डेटा को मानसिक रूप से व्यवस्थित करके, उसमें हेरफेर करके, उसे याद करते हुए, और इसे पहले से संग्रहीत जानकारी से जोड़कर संशोधित करते हैं। संज्ञानात्मक सिद्धांत भाषा, स्मृति, सीखने, अवधारणात्मक प्रणालियों, मानसिक विकारों और सपनों आदि पर लागू होता है।
  - आजकल, मनोवैज्ञानिक इन सभी दृष्टिकोणों का अध्ययन करते हैं और चुनते हैं कि किसी विशेष स्थिति के लिए प्रत्येक दृष्टिकोण से सबसे अच्छा क्या प्रतीत होता है।

## 5. मनोविज्ञान की मुख्य शाखाएँ या क्षेत्र (Main Branches or Fields of Psychology)

1. सामान्य मनोविज्ञान
2. असामान्य मनोविज्ञान
3. तुलनात्मक मनोविज्ञान
4. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
5. सामाजिक मनोविज्ञान
6. औद्योगिक मनोविज्ञान
7. बाल मनोविज्ञान
8. किशोर मनोविज्ञान
9. प्रौढ़ मनोविज्ञान
10. विकासात्मक मनोविज्ञान
11. शिक्षा मनोविज्ञान
12. निदानात्मक या उपचारात्मक या क्लिनिकल मनोविज्ञान
13. परा मनोविज्ञान (आधुनिकतम शाखा)
14. पशु मनोविज्ञान

## 6. मनोचिकित्सकों की कार्यात्मक भूमिका (Functional Role of Psychologists)

- मनोवैज्ञानिक आज कई तरह की परिस्थितियों में काम करते हैं जहां वे लोगों को उनके जीवन की समस्याओं से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए शिक्षण और प्रशिक्षण के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू कर सकते हैं। अक्सर इन्हें ''मानव सेवा क्षेत्रों'' के रूप में जाना जाता है। इनमें नैदानिक, परामर्श, समुदाय, स्कूल और संगठनात्मक मनोविज्ञान शामिल हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक विभिन्न मानसिक विकारों के लिए और चिंता या भय के मामलों में, या घर पर या काम पर तनाव के दौरान व्यावहारिक समस्याओं के साथ ग्राहकों की मदद करने में विशेषज्ञ हैं।
- ये या तो निजी चिकित्सकों के रूप में या अस्पतालों, मानसिक संस्थानों में या सामाजिक एजेंसियों के साथ काम करते हैं। ये ग्राहक की समस्याओं का निदान करने के लिए साक्षात्कार आयोजित करने और मनोवैज्ञानिक परीक्षण करने में शामिल हो सकते हैं, और उनके उपचार और पुनर्वास के लिए मनोवैज्ञानिक विधियों का उपयोग कर सकते हैं।
- नैदानिक मनोविज्ञान में नौकरी के अवसर, बहुत कम लोगों को मनोविज्ञान के इस क्षेत्र की ओर आकर्षित करते हैं। परामर्श मनोवैज्ञानिक उन लोगों के साथ काम करते हैं जो प्रेरक और भावनात्मक समस्याओं से पीड़ित हैं। उनके ग्राहकों की समस्याएँ नैदानिक मनोवैज्ञानिकों की तुलना में कम गंभीर हैं।
- एक परामर्श मनोवैज्ञानिक व्यावसायिक पुनर्वास कार्यक्रमों में शामिल हो सकता है, या व्यावसायिक विकल्प बनाने में तथा जीवन की नई और कठिन परिस्थितियों में समायोजन करने में व्यक्तियों की सहायता कर सकता है। परामर्श मनोवैज्ञानिक मानसिक स्वास्थ्य केंद्रों, अस्पतालों, स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों जैसी सार्वजनिक एजेंसियों के लिए काम करते हैं।

- सामुदायिक मनोवैज्ञानिक आमतौर पर सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे मानसिक स्वास्थ्य एजेंसियों, निजी संगठनों और राज्य सरकारों के लिए काम करते हैं। वे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान में समुदाय और उसकी संस्थाओं की मदद करते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में वे मानसिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित करने के लिए कार्य कर सकते हैं। शहरी क्षेत्रों में वे एक औषधि पुनर्वास कार्यक्रम तैयार कर सकते हैं। कई सामुदायिक मनोवैज्ञानिक विशेष आबादी जैसे कि बुजुर्ग या शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग के साथ भी काम करते हैं।
- विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं के पुनर्निर्देशन और मूल्यांकन के अलावा, समुदाय आधारित पुनर्वास (सीबीआर) सामुदायिक मनोवैज्ञानिकों के लिए प्रमुख रुचि का विषय है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक शैक्षिक प्रणालियों में काम करते हैं, और उनकी भूमिकाएँ उनके प्रशिक्षण के स्तर के अनुसार बदलती रहती हैं।
- उदाहरण के लिए, कुछ शिक्षा मनोवैज्ञानिक केवल परीक्षण करते हैं, जबकि अन्य परीक्षा परिणाम की व्याख्या भी करते हैं, ताकि छात्रों को उनकी समस्याओं में मदद मिल सके। वे शिक्षा नीतियों के निर्माण में भी मदद करते हैं।
- वे माता-पिता, शिक्षकों और प्रशासकों के बीच संचार की सुविधा प्रदान करते हैं, और शिक्षकों और अभिभावकों को एक छात्र की शैक्षणिक प्रगति के बारे में जानकारी भी प्रदान करते हैं।
- संगठनात्मक मनोवैज्ञानिक उन समस्याओं से निपटने में बहुमूल्य सहायता प्रदान करते हैं जिनका सामना किसी संगठन के अधिकारी और कर्मचारी अपनी-अपनी भूमिकाओं में करते हैं।
- वे संगठनों को परामर्श सेवाएँ प्रदान करते हैं और उनकी दक्षता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं।
- कुछ संगठनात्मक मनोवैज्ञानिक मानव संसाधन विकास (एचआरडी) के विशेषज्ञ हैं, जबकि अन्य संगठनात्मक विकास और परिवर्तन प्रबंधन कार्यक्रमों में विशेषज्ञ हैं।

## 7. मनोविज्ञान के उपयोग (Uses of Psychology)

- मनोविज्ञान के लिए सबसे स्पष्ट अनुप्रयोग मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में है जहाँ मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों, अनुसंधान और नैदानिक निष्कर्षों का उपयोग ग्राहकों को मानसिक संकट और मनोवैज्ञानिक बीमारी के लक्षणों को प्रतिबंधित करने और दूर करने में मदद करने के लिए करते हैं। मनोविज्ञान के कुछ अतिरिक्त अनुप्रयोगों में शामिल हैं—
  - शैक्षिक कार्यक्रम विकसित करना
  - एर्गोनॉमिक्स
  - सार्वजनिक नीति को सूचित करना
  - मानसिक स्वास्थ्य उपचार
  - प्रदर्शन में वृद्धि
  - व्यक्तिगत स्वास्थ्य और कल्याण
  - मनोवैज्ञानिक अनुसंधान
  - स्वयं सहायता
  - सामाजिक कार्यक्रम डिजाइन
  - बाल विकास को समझना।

## 8. शैक्षिक मनोविज्ञान क्या है? (What is Educational Psychology)

- हम जानते हैं कि हर कोई एक ही तरह से ज्ञान नहीं सीखता और प्राप्त करता है, तो हम यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कर सकते हैं कि हर कोई अपनी शिक्षा से लाभान्वित हो ?
- शैक्षिक मनोविज्ञान में अनुसंधान का उद्देश्य सीखने का अनुकूलन करना है, और शैक्षिक मनोवैज्ञानिक शिक्षकों, छात्रों और नए कौशल सीखने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति को लाभ पहुँचाने के लिए नई शैक्षिक विधियों का अध्ययन और पहचान करते हैं।
- आप शैक्षिक मनोविज्ञान को किसी भी मानव शिक्षा पर लागू कर सकते हैं, न कि केवल कक्षा में औपचारिक शिक्षा के लिए ही। शैक्षिक मनोविज्ञान के उदाहरणों में निम्न शामिल हैं—
  - अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (एडीएचडी), डिसकैलकुलिया या डिस्लेक्सिया जैसी विशिष्ट सीखने की चुनौतियों वाले लोगों को पढ़ाने के लिए सबसे प्रभावी तरीकों का अध्ययन करना।
  - विभिन्न सेटिंग्स में लोग कितनी अच्छी तरह सीखते हैं, इस पर शोध करना।
  - शिक्षण विधियों का मूल्यांकन और विश्लेषण करना और सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करना।
  - आनुवंशिकी, पर्यावरण, सामाजिक–आर्थिक वर्ग और संस्कृति जैसे कारक सीखने को कैसे प्रभावित करते हैं, इसका अध्ययन करना।
- **शिक्षा मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ (The Literal Meaning of Educational Psychology)**
  - शिक्षा सम्बन्धी मनोविज्ञान, अर्थात् यह शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ का विश्लेषण करने के लिए स्किनर ने निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किए हैं—
    1. शिक्षा मनोविज्ञान का केंद्र मानव व्यवहार है।
    2. शिक्षा मनोविज्ञान खोज और निरीक्षण से प्राप्त तथ्यों का संग्रह करता है।
    3. शिक्षा मनोविज्ञान संगृहीत ज्ञान को सिद्धान्त रूप देता है।
    4. शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा की समस्याओं के समाधान के लिए पद्धतियों का प्रतिपादन करता है।
- **शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएँ (Definitions of Educational Psychology)**
  1. **स्किनर**— शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से सम्बन्धित सम्पूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।
  2. **क्रो व क्रो**—शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्ति के जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।
  3. **कॉलसनिक**—शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के सिद्धान्तों और अनुसन्धान का शिक्षा में प्रयोग है।

4. **स्टीफन**– शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक विकास का क्रमिक अध्ययन है।
5. **सॉरे व टेलफोर्ड**– शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य सम्बन्ध सीखने से है। यह मनोविज्ञान का वह अंग है, जो शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलुओं की वैज्ञानिक खोज से विशेष रूप से सम्बन्धित है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है, कि–

1. शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।
2. शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को अधिक सरल व सुगम बनाता है।
3. शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है, क्योंकि इसके अध्ययन में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग होता है।
4. शिक्षा मनोविज्ञान में मनोविज्ञान के सिद्धांतों व विधियों का प्रयोग होता है।

- **शैक्षिक मनोविज्ञान के सामान्य लक्ष्य (General Goals of Educational Psychology)**
  - **समझ (Understanding)**
    - शैक्षिक घटना की गहरी समझ शैक्षिक मनोविज्ञान के लक्ष्यों में से एक है।
    - शैक्षिक घटनाओं की अच्छी समझ और उपलब्ध चरों का अध्ययन और उनके बीच संबंधों की खोज, इस घटना के परिणामस्वरूप होने वाले कारणों, उद्देश्यों और प्रेरणाओं के अलावा, यह सब शिक्षण अधिगम की सफलता की निरंतरता में योगदान देता है। विभिन्न शैक्षिक स्थितियों की प्रक्रिया और इसके सामंजस्य के अंतर्गत शैक्षिक मनोविज्ञान के मूल उद्देश्यो में छात्रों के व्यवहार को समझना और उनकी अंतरिम, मानसिक और मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा करना, शैक्षिक वातावरण में जारी प्रत्येक व्यवहार के पीछे के कारणों को समझना, उन्हें सामान्य मानसिक कारकों के अनुसार वर्गीकृत करना और प्रत्येक समूह को उनकी क्षमताओं के अनुसार निर्देशात्मक तरीके प्रदान करना, ये सभी शामिल हैं।
- **पूर्वानुमान (Forecasting)**
  - पूर्वानुमान एक विशिष्ट समय पर होने वाली एक विशिष्ट घटना की अपेक्षा है, जो उनके होने से पहले उपलब्ध चर के आधार पर होती है, और इस प्रकार चर के बीच संबंधों का अध्ययन करती है, और उनके आधार पर धारणाएं बनाने के अलावा, उनकी घटना और उनके परिणामों की भविष्यवाणी करने के अलावा, छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के अनुसार उपलब्ध करायी जाएगी।
  - साथ ही, शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में भविष्यवाणी अपरिहार्य परिणाम नहीं हो सकती है, लेकिन यह इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह अपनी विभिन्न परिस्थितियों में होने वाली कई शैक्षिक और व्यावसायिक समस्याओं को हल करने में योगदान दे सकती है। इस आधार पर प्रतिभाशाली छात्रों को वर्गीकृत किया जाता है, तथा सामान्य छात्रों व कम उपलब्धि वाले छात्रों को भी वर्गीकृत किया जाता है।
  - इस आधार पर छात्र की जरूरतों का अनुमान लगाना संभव है, उदाहरण के लिए, प्रतिभाशाली छात्रों को उनकी मानसिक क्षमताओं को संतुष्ट करने वाले संवर्धन कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है, क्योंकि उन्हें शैक्षिक कार्यक्रमों से जोड़ने से छात्रों के इस समूह के लिए शैक्षिक सामग्री की अपर्याप्तता के परिणामस्वरूप कई व्यवहार संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।
- **नियंत्रण (Controlling)**
  - नियंत्रण कुछ ऐसी क्रियाएँ हैं जो शैक्षिक प्रक्रिया के आयोजक कारक/परिवर्ती कारक को चर की ओर ले जाती हैं, साथ ही उनके बीच संबंधों का अध्ययन करती हैं, उन्हें नियंत्रित करने की कोशिश करती हैं, शैक्षिक आउटपुट और परिणामों को यथासंभव आवश्यकताओं के अनुसार समायोजित करती हैं, और शैक्षिक प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरा करने में सक्षम होती हैं।

    हालांकि, बड़ी संख्या में परिवर्ती कारक, उनकी बातचीत और उनकी परिस्थितियों के कारण, कुछ मामलों में समायोजन प्रक्रिया कुछ हद तक असंभव हो जाती है। जैसे कि कुछ आश्चर्यजनक परिवर्ती कारक की उपस्थिति जैसे अलग-अलग मौसम की स्थिति, या अचानक बीमारी आदि जिन्हें नियंत्रित नहीं किया जा सकता है।
- **शैक्षिक मनोविज्ञान के विशेष लक्ष्य (Special Goals of Educational Psychology)**
  - उप–लक्ष्यों या विशेष लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए, वे शैक्षिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण तत्वों से संबंध रखते हैं। साथ ही उन्हें प्रभावित करने वाले सभी परिवर्ती कारक, एक घटना के उद्भव में योगदान देने वाले कारण, या शैक्षिक और व्यावसायिक समस्याओं की समझ, और इस प्रकार उन्हें हल करने के लिए उचित तरीके की खोज करते हैं।
  - ये दो मुख्य लक्ष्य इस प्रकार हैं–
    - व्यवहार मनोविज्ञान के सिद्धांतों के अध्ययन के माध्यम से मानव व्यवहार की व्याख्या का सैद्धांतिक ज्ञान, और शैक्षिक स्थितियों में व्यक्तिगत व्यवहार की व्याख्या पर इसके विचार, नींव, सिद्धांत और उनके लिए सैद्धांतिक रूपरेखा आदि तैयार करना।
    - इस ज्ञान को व्यावहारिक तरीके से लागू करना, और शैक्षिक प्रक्रिया के प्रभारी लोगों को शैक्षिक और कक्षा स्थितियों में इसका उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण देना। इस प्रकार एक प्रभावी सीखने की प्रक्रिया को अधिक कुशलता से प्राप्त करना।

## 9. शैक्षिक मनोविज्ञान के तरीके (Methods of Educational Psychology)

- डेटा एकत्र करने और शोध अध्ययन करने के लिए शोधकर्ताओं द्वारा विभिन्न प्रकार की तकनीकों का उपयोग किया जाता है। शिक्षा, मनोविज्ञान और अन्य सामाजिक विज्ञानों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग के साथ, नई शोध रणनीतियाँ विकसित हुई हैं।
- डेटा एकत्र करने की महत्वपूर्ण विधियाँ और तकनीकें निम्नलिखित हैं–
  - आत्मनिरीक्षण
  - अवलोकन
  - नैदानिक विधि
  - केस स्टडी

- सर्वेक्षण या विभेदक तरीके
- वैज्ञानिक या प्रायोगिक विधि

- **आत्मनिरीक्षण (Introspection)**
- ऐतिहासिक रूप से आत्मनिरीक्षण सभी में सबसे पुराना तरीका है, जिसका उपयोग पहले दर्शनशास्त्र में किया जाता था, और फिर मनोविज्ञान में विषय के सचेत अनुभव के बारे में डेटा एकत्र करने के लिए प्रयोग होने लगा। आत्मनिरीक्षण का अर्थ है एक आत्म अवलोकन में अपने स्वयं के मानसिक स्वास्थ्य और मन की स्थिति को समझने के लिए विभिन्न परिस्थितियाँ शामिल करना। इस पद्धति को मनोविज्ञान में संरचनावादियों द्वारा विकसित किया गया था जिन्होंने मनोविज्ञान को व्यक्ति के सचेत अनुभवों के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया था।

  आत्मनिरीक्षण के कुछ फायदे और नुकसान हैं जो निम्न प्रकार हैं –
- **गुण (Merits)**
- यह स्वयं के बारे में जानकारी देता है जो अन्य तरीकों से जानना कठिन है।
- यह एक आसान तरीका है और इसके लिए किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं है। यह प्रायोगिक और प्रेक्षण विधि जैसी अन्य विधियों के लिए आधार प्रस्तुत करता है।
- **अवगुण (Demerits)**
- यह विधि व्यक्तिपरक प्रकृति की है, और इसमें वैज्ञानिक निष्पक्षता का अभाव है।
- इस पद्धति के खिलाफ सबसे गंभीर आपत्ति यह है कि मानव मन निर्जीव वस्तुओं जैसे– पत्थर या कुर्सियों आदि की तरह स्थिर नहीं है। हमारी मानसिक प्रक्रिया निरंतर परिवर्तन के अधीन है, इसलिए जब कोई आत्मनिरीक्षण करने का प्रयास करता है, तो मानसिक प्रक्रिया की स्थिति गायब हो जाती है और यह पूर्वव्यापी हो जाती है।
- मानव मन दो भागों में बँटा हुआ है। एक उसका अपना मानसिक ऑपरेशन है और दूसरा वह विषय है जिस पर यह मानसिक ऑपरेशन निर्देशित करता है; जैसे–किसी भी व्यक्ति से मानसिक प्रक्रिया के दौरान अपने दिमाग के कामकाज में भाग लेने की अपेक्षा करना। रॉस ने आत्मनिरीक्षण की सीमा पर टिप्पणी करते हुए कहा, 'प्रेक्षक और प्रेक्षित एक ही हैं, किन्तु मन क्षेत्र और अवलोकन का साधन दोनों अलग हैं।
- आत्मनिरीक्षण का प्रयोग बच्चों और पागल लोगों पर नहीं किया जा सकता है।
- विभिन्न आत्मनिरीक्षण करने वालों से एकत्र किए गए निष्कर्षों के संबंध में परस्पर विरोधी रिपोर्टें प्रस्तुत करता है।
- **अवलोकन (Observation)**
  - व्यवहार एक वस्तुनिष्ठ विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान के विकास के साथ, आत्मनिरीक्षण की विधि को मानव और पशु व्यवहार के सावधानीपूर्वक अवलोकन द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था। अवलोकन का शाब्दिक अर्थ है स्वयं को बाहर वातावरण में समायोजित करना। यह लगभग सभी प्रकार के शोध अध्ययनों में डेटा एकत्र करने की एक बहुत ही महत्वपूर्ण विधि है। अनुसंधान, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, अनुसूचित या अनिर्धारित, प्राकृतिक या कृत्रिम, प्रतिभागी और गैर–प्रतिभागी रूप में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के अवलोकन हैं, लेकिन दो बुनियादी प्रकार के अवलोकन हैं, जो निम्न हैं :
- **प्राकृतिक अवलोकन (Natural Observation)**–प्राकृतिक अवलोकन में प्रेक्षक व्यक्तियों के विशिष्ट व्यवहार और विशेषताओं का प्राकृतिक वातावरण में निरीक्षण करता है,और व्यक्ति को इस तथ्य की जानकारी नहीं होती है कि उनका व्यवहार किसी के द्वारा देखा जा रहा है। शिक्षक अपने छात्र को खेल के मैदान में या किसी अन्य सामाजिक सभा में उसे सचेत किए बिना उसके व्यवहार का निरीक्षण कर सकता है। प्राकृतिक प्रेक्षण बिना किसी उपकरण के कहीं भी किया जा सकता है।
- **प्रतिभागी अवलोकन (Participant Observation)**–प्रतिभागी अवलोकन में पर्यवेक्षक उस समूह का हिस्सा बन जाता है जिसका वह अवलोकन करना चाहता है। अवलोकन अध्ययन विशेष रूप से बहुत महत्वपूर्ण है और बच्चों की विकासात्मक विशेषताओं पर महत्वपूर्ण परिणाम देता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अवलोकन डेटा एकत्र करने की एक वैज्ञानिक तकनीक है, जिसके परिणामों को सत्यापित किया जा सकता है और व्यवहार संबंधी समस्याओं का पता लगाने के लिए उन पर भरोसा किया जा सकता है।
- **गुण (Merits)**
  - इस प्रकार का अवलोकन बाहरी दुनिया को जानने का एक स्वाभाविक और सामान्य तरीका है लेकिन व्यक्ति के दिमाग को भी जानने के लिए कार्यकारी है।
  - यह विधि वस्तुनिष्ठ प्रकृति की है, और स्वतंत्र रूप से व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से मुक्त है।
  - इस विधि से हम जितने चाहें उतने बच्चों को देख सकते हैं।
  - यह विधि उन बच्चों और असामान्य व्यक्ति के लिए काफी उपयुक्त है जिनकी आत्मनिरीक्षण के माध्यम से जाँच नहीं की जा सकती है।
  - इसे कभी भी और कहीं भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
- **अवगुण (Demerits)**
  - अवलोकन केवल प्रत्यक्ष व्यवहार के बारे में डेटा एकत्र करने के लिए उपयोगी है जो कई गतिविधियों में प्रकट होता है।
  - यह खुला व्यवहार आंतरिक मानसिक प्रक्रिया के संबंध में विश्वसनीय जानकारी प्रदान नहीं करता है। हम व्यक्ति की मानसिक स्थिति का अनुमान केवल प्रत्यक्ष व्यवहार के आधार पर ही लगा सकते हैं जो सत्य हो भी सकता है और नहीं भी।
  - वयस्कों के मामले में कोई निष्कर्ष निकालना बहुत मुश्किल हो जाता है, क्योंकि वे पर्यवेक्षक की उपस्थिति में अपने वास्तविक व्यवहार को छुपा सकते हैं।
  - व्याख्या की विषयपरकता इस पद्धति की एक और सीमा है। पर्यवेक्षक अपने पिछले अनुभव के पूर्वाग्रह पर बाहरी उत्तेजना की अपनी संवेदना की व्याख्या कर सकता है।
  - पर्यवेक्षक अपनी व्याख्या में पक्षपाती हो सकता है। कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि मजबूत व्यक्तिगत रुचियाँ शोधकर्ता को केवल उन्हीं चीजों को देखने के लिए प्रेरित करती हैं जिन्हें वह देखना चाहता है।
  - प्रेक्षण दो प्रकार की त्रुटियों के अधीन है, नमूना त्रुटि और प्रेक्षक त्रुटि। पहली त्रुटि अवलोकन की जाने वाली स्थिति के चयन की अपर्याप्तता

के कारण होती है। प्रेक्षक त्रुटि अवलोकन की जाने वाली स्थिति के ज्ञान और पृष्ठभूमि के कारण हो सकती है, क्योंकि कभी-कभी पर्यवेक्षक पूरी स्थिति से परिचित नहीं होता है और इसलिए वह त्रुटि कर सकता है।

- **प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)**
  - मनोविज्ञान में इस पद्धति का विकास मनोवैज्ञानिकों द्वारा मानव व्यवहार का वस्तुपरक और वैज्ञानिक अध्ययन करने के निरंतर प्रयासों द्वारा किया जाता है।
  - व्यवहारवाद के प्रमुख योगदानों में से एक व्यवहार को समझने, नियंत्रित करने और भविष्यवाणी करने के लिए प्रायोगिक पद्धति का विकास करना है।
  - यह सबसे सटीक, नियोजित व्यवस्थित अवलोकन है।
  - प्रयोगात्मक विधि एक व्यवस्थित प्रक्रिया का उपयोग करती है जिसे प्रयोगात्मक डिजाइन कहा जाता है। प्रायोगिक डिजाइन शोधकर्ता को अपने शोध को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने के लिए महत्वपूर्ण दिशानिर्देश प्रदान करता है।
  - डिजाइन की रूपरेखा उस समस्या की प्रगति पर निर्भर करती है जिसकी जाँच एक अन्वेषक करना चाहता है। प्रायोगिक प्रगति का खाका या डिजाइन इस प्रकार है :
    - एक शोध विषय का चयन
    - परिकल्पना तैयार करना
    - एक उपयुक्त डिजाइन का चयन
    - डेटा एकत्र करना
    - डेटा का विश्लेषण, व्याख्या चर्चा और निष्कर्ष
  - प्रयोग प्रयोगशाला में या कक्षा में या समुदाय में कहीं भी किए जा सकते हैं। प्रयोग में एक नियंत्रण समूह और एक प्रयोगात्मक समूह के व्यवहार के बीच तुलना शामिल है।
  - परिकल्पनाओं का एक तर्कसंगत आधार होता है या ये सिद्धांत या प्रारंभिक प्रयोग के ढाँचे से उभरी हैं। उदाहरण के लिए एक प्रयोग में दो या दो से अधिक परिवर्ती कारक शामिल होते हैं। प्रोत्साहन का सीखने पर एक मापनीय प्रभाव पड़ता है। वे परिवर्ती कारक जिनके प्रभावों का अध्ययन किया जा रहा है, स्वतंत्र चर कहलाते हैं।

- **गुण (Merits)**

  यह विधि समस्याओं को हल करने की सबसे व्यवस्थित प्रक्रिया है। यह विश्वसनीय जानकारी प्रदान करती है।
  - यह एक पुनरीक्षण योग्य विधि है।
  - यह मनोविज्ञान को एक वैज्ञानिक अध्ययन बनाती है।
  - यह समस्याओं के बारे में वस्तुनिष्ठ और सटीक जानकारी प्रदान करता है।
  - यह प्रेक्षक को व्यक्ति के दिमाग तक आसान पहुँच प्रदान करती है।
  - यह आगे के प्रयोग के लिए नवीन विचार प्रदान करती है।
  - यह हमें मानव व्यवहार को नियंत्रित और निर्देशित करने में सक्षम बनाती है।
  - यह शैक्षिक, व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं में लागू होती है।

- **अवगुण (Demerits)**
  - इसे प्रयोगशाला जैसी स्थिति में व्यवस्थित किया जाता है। इसकी स्थिति कृत्रिम रूप से व्यवस्थित होती है। इसका व्यवहार एक प्राकृतिक घटना है, और यह कृत्रिम वातावरण में बदल सकती है।
  - यह विधि समय लेने वाली और महँगी है। इसके अलावा इसके लिए विशेष ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होती है।
  - मनोवैज्ञानिकों ने इस तथ्य की आलोचना की है कि ज्यादातर प्रयोग चूहों, बिल्लियों और कुत्तों पर किए गए हैं। इसमें परिणाम आयोजित किए जाते हैं और फिर मनुष्यों पर लागू होते हैं।
  - यह कभी-कभी केवल उसी चीज में हस्तक्षेप करता है जिसे हम देखने की कोशिश कर रहे हैं।
  - **नैदानिक विधि (Clinical Method)**—इस पद्धति का उपयोग मुख्य रूप से कुसमायोजित और विचलित मामलों की व्यवहार समस्याओं पर विस्तृत जानकारी एकत्र करने के लिए किया जाता है। इस पद्धति का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत मामलों या समूह के मामलों का अध्ययन करना, उनकी विशिष्ट समस्याओं का पता लगाना, उनका निदान करना और उनके वातावरण में उनके पुनर्वास के लिए चिकित्सीय उपायों का सुझाव देना है। इसमें निम्नलिखित चरण शामिल हैं—
    - साक्षात्कार
    - सूचना संग्रह
    - एक परिकल्पना तैयार करना
    - निदान करना
    - एक उपचार कार्यक्रम की योजना बनाना
  - **केस स्टडी (Case Study)**—केस स्टडी किसी विषय का गहन अध्ययन है। यह किसी व्यक्ति, समूह या घटना का गहन विश्लेषण है। इसके द्वारा व्यक्तिगत साक्षात्कार, साइकोमेट्रिक परीक्षण, प्रत्यक्ष अवलोकन और अभिलेखीय रिकॉर्ड सहित विभिन्न तकनीकों को नियोजित किया जाता है। विषय की दुर्लभ घटनाओं और स्थितियों का वर्णन करने के लिए नैदानिक अनुसंधान में मनोविज्ञान में केस स्टडी का सबसे अधिक बार उपयोग किया जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान में केस स्टडी का विशेष रूप से उपयोग किया जाता है। यह शिक्षा में निम्नलिखित समस्याओं से संबंधित है—
    - छात्रों में रुचि की कमी
    - छात्र में आक्रामक व्यवहार
    - दिन में सपने देखना
    - खराब शैक्षणिक प्रदर्शन
    - भावनात्मक समस्या
    - सामाजिक समस्याएँ
    - सहानुभूतिपूर्ण समझ
    - समस्या का पता लगाना
    - रिपोर्ट स्थापित करना
    - उपचार

## 10. शैक्षिक मनोविज्ञान : शिक्षकों और शिक्षा के लिए महत्व (Educational Psychology : Importance for Teacher & Education)

- **शिक्षकों के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान का महत्व (Importance of Educational Psychology for Teachers)**—शिक्षक एक दार्शनिक की तरह होता है जो अपने छात्र का मार्गदर्शन करता है। वह छात्रों की वृद्धि और विकास के बारे में जागरूक होने के लिए जिम्मेदार है। यह शैक्षिक मनोविज्ञान ही है जो शिक्षक को विभिन्न तकनीकों का उपयोग करने में सक्षम बनाता है। शैक्षिक मनोविज्ञान के शिक्षकों के महत्व के लिए निम्नलिखित बिंदु हैं—
- शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक को यह जानने में सहायता करता है कि अधिगम कैसे होता है।
- यह एक शिक्षक को सक्षम बनाता है कि सीखने की प्रक्रिया कैसे शुरू की जानी चाहिए, कैसे प्रेरित किया जाए, कैसे याद किया जाए या कैसे सीखा जाए।
- यह विद्यार्थियों की योग्यताओं को सही दिशा में ले जाने के क्रम में विद्यार्थियों को सही दिशा में मार्गदर्शन करने में शिक्षकों की सहायता करता है।
- यह एक शिक्षक को शिक्षार्थियों की प्रकृति और उनकी क्षमताओं के बारे में सूचित करता है।
- यह शिक्षक को छात्र के व्यक्तित्व को विकसित करने में मदद करता है, क्योंकि पूरी शैक्षिक प्रक्रिया छात्र के व्यक्तित्व विकास पर निर्भर होती है।
- यह एक शिक्षक को सीखने की अपनी पद्धतियों को शिक्षार्थी की प्रकृति। माँग के अनुसार समायोजित करने में मदद करता है।
- यह एक शिक्षक को व्यक्तिगत मतभेदों की समस्याओं को जानने और प्रत्येक छात्र के साथ उसकी योग्यता के आधार पर व्यवहार करने में सक्षम बनाता है।
- यह एक शिक्षक की मदद करता है कि छात्र की सीखने की समस्याओं को कैसे हल किया जाए।
- यह एक शिक्षक की मदद करता है कि छात्रों का मूल्यांकन कैसे किया जाए, कि शिक्षण और सीखने का क्या उद्देश्य हासिल किया गया है।
- **शिक्षा में शैक्षिक मनोविज्ञान का महत्व (Importance of Educational Psychology in Education)**—निम्नलिखित बिंदु शिक्षा में शिक्षा मनोविज्ञान के महत्व को दर्शाते हैं। यह, यह भी दर्शाता है कि शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा का एक दूसरे के लिए कितना महत्व है।
- **शिक्षार्थी (Learner)**—शैक्षिक मनोविज्ञान विभिन्न कारकों का अध्ययन करता है जो छात्रों पर प्रभाव डालते हैं, जिसमें घर का वातावरण, सामाजिक समूह, सहकर्मी समूह, उसकी भावनात्मक संवेदनायें और मानसिक स्वच्छता आदि शामिल हो सकते हैं। वांछित डेटा प्राप्त करने के लिए जैसे शिक्षार्थी को उसकी मानसिकता, व्यवहार और उसकी अभिव्यक्तियों के बारे में जानने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग किया जाता है।
- **सीखने की प्रक्रियाँ (The Learning Process)**—यहाँ शैक्षिक मनोविज्ञान इस बात की जाँच करता है कि सूचना और ज्ञान को कैसे स्थानांतरित किया जाए और उस उद्देश्य के लिए किस प्रकार की पद्धतियों का उपयोग किया जाये।
- **सीखने की स्थिति (The Learning Situation)**—शैक्षिक मनोविज्ञान उन कारकों का अध्ययन करता है जो प्रकृति में स्थितिजन्य हैं कि कक्षा के वातावरण को कैसे प्रबंधित किया जाए और अनुशासन कैसे बनाए रखा जाए। इसके अलावा, यह विभिन्न ऑडियो वीडियो एड्स और शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने में इसकी भूमिका का अध्ययन करता है।
- **पाठ्यचर्या विकास (Curriculum Development)**—शैक्षिक मनोविज्ञान पाठ्यचर्या विकासकर्ताओं को यह समझने में मदद करता है कि किस प्रकार का पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिए और अगली पीढ़ी को स्थानांतरित करने के लिए शिक्षकों को किस प्रकार की सामग्री दी जानी चाहिए।
- **मूल्यांकन तकनीकें (Evaluation Techniques)**—शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षकों की सहायता करता है कि शिक्षार्थी का परीक्षण करने के लिए किस प्रकार की मूल्यांकन तकनीकों का उपयोग किया जाना चाहिए तथा सूचना और अवधारणा को किस विस्तार तक स्थानांतरित किया गया है।

## 11. शैक्षिक प्रक्रिया की सफलता या असफलता और उसके उद्देश्यों की प्राप्ति को प्रभावित करने वाले कारक (Factors that affect the Success or Failure of the Educational Process and the Achievement of its Objectives)

- सीखने के तरीके, रणनीतियाँ और छात्रों की श्रेणियों के लिए उपयुक्तता।
- व्यक्तिगत मतभेदों के प्रति उनकी संवेदनशीलता।
- छात्र का व्यक्तित्व।
- सामाजिक परिस्थितियाँ।
- मानसिक और संज्ञानात्मक परिपक्वता का स्तर।
- सीखने की प्रक्रिया के लिए प्रेरणा की मात्रा।
- कक्षा का सामान्य और भावनात्मक वातावरण।

## महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. मनोवैज्ञानिक कसौटी के अंतर्गत कौन-सा मापदंड नहीं है ?
   (A) प्रेरणा
   (B) स्तर
   (C) साहित्यिक उपकरण
   (D) चित्र/खाका

2. मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान है।
   (A) विषय केन्द्रित शिक्षा
   (B) शिक्षक केन्द्रित शिक्षा
   (C) क्रिया केन्द्रित शिक्षा
   (D) बाल केन्द्रित शिक्षा

3. बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र है–
   (A) केवल शैशवावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
   (B) केवल गर्भावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
   (C) केवल बाल्यावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
   (D) गर्भावस्था से किशोरावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

4. बाल मनोविज्ञान के आधार पर कौन–सा कथन सर्वोत्तम है ?
   (A) सारे बच्चे एक जैसे होते हैं
   (B) कुछ बच्चे एक जैसे होते हैं
   (C) कुछ बच्चे विशिष्ट होते हैं
   (D) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है

**5.** बाल मनोविज्ञान का केन्द्र बिन्दु है–
(A) अच्छा शिक्षक
(B) बालक
(C) शिक्षण प्रक्रिया
(D) विद्यालय

**6.** मनोविज्ञान सामान्यतया मानव .............. से सम्बन्धित होता है।
(A) भावनाओं (B) विचारों
(C) आचरण (D) ये सभी

**7.** शैक्षिक तकनीकी में मनोविज्ञान के प्रयोग को क्या कहते हैं ?
(A) नरम उपागम
(B) कठोर उपागम
(C) शिक्षाशास्त्रीय उपागम
(D) प्रणाली विश्लेषण

**8.** शिक्षा मनोविज्ञान है–
(A) व्यावहारिक विज्ञान
(B) मानक विज्ञान
(C) विशुद्ध विज्ञान
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

**9.** विकासात्मक मनोविज्ञान में जीवन का अध्ययन किया जाता है–
(A) किशोरावस्था में (B) जीवनपर्यन्त
(C) जन्म से (D) गर्भकाल में

**10.** शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योंकि–
(A) इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके
(B) इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके
(C) इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके
(D) इससे शिक्षक को आत्म-सन्तुष्टि मिल सके

**11.** 1882 ई. में किस मनोवैज्ञानिक द्वारा लन्दन में मानवीय विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशाला का निर्माण किया गया ?
(A) गाल्टन (B) अल्फ्रेड बिने
(C) वुडवर्थ (D) कैटेल

**12.** बाल मनोविज्ञान का केन्द्र-बिन्दु है–
(A) विद्यालय (B) शिक्षण प्रक्रिया
(C) बालक (D) अच्छा शिक्षक

**13.** बाल मनोविज्ञान के आधार पर कौन-सा कथन सर्वोत्तम है ?
(A) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है
(B) कुछ बच्चे विशिष्ट होते हैं
(C) सारे बच्चे एक जैसे होते हैं
(D) कुछ बच्चे एक जैसे होते हैं

**14.** मनोविज्ञान प्रारम्भ में किस विषय का अंग था?
(A) दर्शनशास्त्र (B) नीतिशास्त्र
(C) तर्कशास्त्र (D) भौतिकी

**15.** बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र है–
(A) केवल शैशवावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
(B) केवल गर्भावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
(C) केवल बाल्यावस्था की विशेषताओं का अध्ययन
(D) गर्भावस्था से किशोरावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

**16.** ''मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का परित्याग किया, फिर अपने मन का और फिर अपनी चेतना का, अभी वह एक प्रकार के व्यवहार को संजोये है।'' कथन था–
(A) टिचनर का (B) वुण्ट का
(C) वुडवर्थ का (D) मैक्डूगल का

**17.** शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य है ?
(A) बच्चे यथावत् वही सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है।
(B) बच्चे अपने ज्ञान का स्वयं सृजन करते हैं।
(C) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्ण ज्ञान नहीं होता है।
(D) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है।

**18.** बाल मनोविज्ञान तथा बाल विकास में प्रमुख अन्तर है–
(A) अध्ययन पद्धतियों में
(B) क्षेत्र में
(C) कार्य में
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

**19.** बाल विकास इनका अध्ययन है–
(A) बालकों के विकास के विभिन्न पहलुओं का
(B) बालकों के व्यवहारों का
(C) विकास को प्रभावित करने वाले तत्वों का
(D) उपर्युक्त सभी का

**20.** शैक्षणिक मनोविज्ञान.............के माध्यम से शिक्षा में योगदान देता है।
(A) विद्यार्थी की समस्याओं को समझने
(B) शिक्षक की समस्याओं को समझने
(C) पाठ्यक्रम को समझने
(D) शैक्षणिक समस्याओं को समझने

**21.** निम्नलिखित में से किसको 'मनोविश्लेषण के पिता' के रूप में वर्णित किया गया है ?
(A) सिगमण्ड फ्रायड
(B) एरिक एच. एरिक्सन
(C) अब्राहम मैस्लो
(D) जीन पियाजे

**22.** शैक्षणिक मनोविज्ञान का ज्ञान, शिक्षक को सक्षम बनाता है कि वे–
(A) विद्यार्थियों का बेहतर मूल्यांकन करें
(B) विद्यार्थियों को अनुशासित करें
(C) विद्यार्थियों को बेहतर समझें
(D) पाठ्यक्रम को बेहतर ढंग से पढ़ायें

## उत्तरमाला

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **1.** (B) | **2.** (D) | **3.** (D) | **4.** (D) | **5.** (B) |
| **6.** (B) | **7.** (C) | **8.** (B) | **9.** (C) | **10.** (C) |
| **11.** (B) | **12.** (C) | **13.** (A) | **14.** (A) | **15.** (D) |
| **16.** (C) | **17.** (B) | **18.** (B) | **19.** (D) | **20.** (D) |
| **21.** (A) | **22.** (C) | | | |

❑❑